Impact Factor (QJIF): 8.38 E-ISSN: 2583-7206, P-ISSN: 3049-2432

International Journal of All Subject Research

Received: 24/January/2026 IJASR: 2026; 5(2):31-32 Accepted: 05/March/2026

बिरसा मुंडा स्वतंत्रता संग्राम के अद्वितीय नायक

***[1]डॉ. किरण हीरा**

*[1]सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शासकीय महाविद्यालय, बरेला, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

यह शोध पत्र बिरसा मुंडा को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अद्वितीय और प्रेरणास्रोत नायक के रूप में प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उनके जीवन, विचारधारा, सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों तथा उनके आंदोलन के ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करना है। बिरसा मुंडा ने केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष नहीं किया, बल्कि आदिवासी समाज में जागरूकता, आत्मसम्मान और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी नेतृत्व किया। उनके द्वारा संचालित "उलगुलान" आंदोलन ने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों और जमींदारी शोषण के खिलाफ संगठित प्रतिरोध का स्वरूप ग्रहण किया। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि बिरसा मुंडा ने भूमि को जीवन का आधार मानते हुए "धरती आबा" की अवधारणा को स्थापित किया, जिससे आदिवासी समाज में अपनी पहचान और अधिकारों के प्रति चेतना विकसित हुई। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन, शिक्षा के प्रसार, स्त्री सम्मान तथा धार्मिक आत्मनिर्भरता पर बल दिया। उनके विचार केवल विद्रोह तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे समग्र सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास के पक्षधर थे। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यद्यपि उनका आंदोलन क्षेत्रीय स्तर तक सीमित रहा, फिर भी उसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की नींव को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। निष्कर्षतः, बिरसा मुंडा का जीवन संघर्ष, त्याग और नेतृत्व आज भी सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक अस्मिता और स्वराज की प्रेरणा प्रदान करता है। उनका योगदान भारतीय इतिहास में सदैव अमिट रहेगा।

मुख्य शब्द: बिरसा मुंडा, उलगुलान आंदोलन, आदिवासी अस्मिता।

प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध नहीं था, बल्कि यह उस समय समग्र संघर्ष का प्रतीक था। जिससे भारत के प्रत्येक वर्ग जाति और जनजाति ने अपने अस्तित्व संस्कृति भूमि और सम्मान की रक्षा हेतु बलिदान दिया इस संघर्ष में जहां एक और महान नेताओं जैसे महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह और रानी लक्ष्मी बाई के नाम अमर है, वहीं दूसरी और देश के जंगलों और पहाड़ों से निकले जननायकों ने भी अपने अदम्य साहस और त्याग से स्वतंत्रता के इस आंदोलन को सशक्त किया ऐसे ही एक अद्वितीय जननायक थे "धरती आबा बिरसा मुंडा" जिन्होंने भारत के आदिवासी समाज को संगठित कर ब्रिटिश शासन और जमींदारी प्रथा के विरुद्ध एक महान क्रांति का शंखनाद किया।

बिरसा मुंडा ने न केवल उपनिवेशन सत्ता के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई बल्कि उन्होंने अपने समाज में सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक चेतनाओं का भी संचार किया। उन्होंने आदिवासी अस्मिता को नई परिभाषा दी और भारत के स्वतंत्रता संग्राम की जड़ों से मजबूत किया।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल 1857 या 1947 की घटनाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि इसकी जड़ बहुत गहराई तक फैली थी। इन्हीं जड़ो में एक महान ओजश्वी और अदम्य योद्धा का नाम अमर है। धरती आबा बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों की अन्यापूर्ण नितियों, शोषण और जनजाति संस्कृति पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जन-जागरण का बिल्कुल फूंका। वे न केवल झारखंड और आसपास के क्षेत्र में जनजाति समुदायों के नायक बने, बल्कि समूचे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उन्होंने प्रेरणा का स्रोत प्रदान किया।

जीवन परिचय

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर 1875 को वर्तमान झारखंड राज्य के उलीहातु गांव चक्रधरपुर रांची में हुआ था। उनके पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी हाथू था। बिरसा का बचपन अत्यंत गरीबी में बीता वे मुंग जनजाति से संबंध रखते थे, जो मुख्यतः जंगल और खेती पर निर्भरती थी। बिरसा का प्रारंभिक जीवन प्रकृति की गहराई से जुड़ा था। उन्होंने अपने बचपन में ही ब्रिटिश सरकार और उनके समर्थन में कार्य करने वाले जमीदारों के शोषण को देखा, अंग्रेजों ने जंगल की संपदा से मुंडाओं के पुश्तैनी अधिकारों को खत्म करने का प्रयास किया। स्थानीय लोग बेगार (बिना वेतन के श्रम) करने वाले मजदूर थे। इन परिस्थितियों ने उनके मन में विद्रोह की चिंगारी पैदा की बिरसा मुंडा ने कहा कि सिंह बोगा मुंडाओं के सर्वोच्च ईश्वर ने मुझे पर्याप्त शक्ति दी है और वहीं दूसरी किसी और देवी शक्ति की आराधना नहीं करनी चाहिए मैं रोगियों को चंगा करूंगा चुटिया नागपुर मुंडा जाति की धरोहर है और हम सरकार की कोई आज्ञा नहीं मानेंगे हम कोई मालगुजारी नहीं देंगे हम पुलिस,

***Corresponding Author:** डॉ. किरण हीरा

मजिस्ट्रेट और जमीदारों की बात नहीं सुनेंगे और बेगार भी नहीं करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में बिरसा ने कुछ समय तक जर्मन मिशन स्कूल चाईबासा में अध्ययन किया। बिरसा चाईबासा के विद्यालय में 1886-90 तक रहे, यही उन्होंने ईसाई धर्म का प्रभाव देखा, लेकिन शीघ्र ही उन्होंने यह महसूस किया कि मिशनरी शिक्षा और धर्मांतरण उनके समाज की मौलिक पहचान को मिटाने का प्रयास है उन्होंने इस प्रणाली का विरोध किया और अपने समाज को अपनी परंपराओं, देवी-देवताओं को और संस्कृति की ओर लौटने का आह्वान किया।

सामाजिक और धार्मिक सुधारक के रूप में भूमिका

बिरसा मुंडा ने केवल राजनीतिक विद्रोह नहीं किया बल्कि अपने समाज में सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण की अलग जगाई। उन्होंने अपने आंदोलन को उलगुलान (महाआंदोलन) का नाम दिया, उन्होंने कहा "हमारी धरती हमारी है इसे कोई हमसे छीन नहीं सकता" बिरसा ने उलगुलान का आरंभ धार्मिक स्थलों की यात्रा से किया। बिरसा के अनुयायियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही थी। यह सब बिरसैत धर्म में शामिल हुए थे। मुंडा आदिवासियों का विद्रोह 1899 से 1890 के बीच हुआ। इसका नेतृत्व बिरसा मुंडा के द्वारा किया गया। मुंडा जाति में सामूहिक खेती का प्रचलन था, लेकिन जागीदारों ठेकेदारों (लगान वसूलने वालों) बनियों और सूत खोरों ने सामूहिक खेती की परंपरा पर हमला बोला मुंडा सरदार 30 वर्ष तक सामूहिक खेती के लिए लड़ते रहे। बिरसा आंदोलन के बारे में कोलकाता से प्रकाशित स्टेटसमैन ने 14 जून 1900 को अपने भारत संपादकीय में लिखा कि जिन व्यक्तियों को छोटा नागपुर की परिस्थितियों का ज्ञान था उन्हें बिरसा का आंदोलन आश्चर्यजनक या अप्रत्याशित नहीं लग सकता। संपादक के अनुसार मुंडाओं की समस्याएं कम से कम 20 वर्ष पुरानी है इन समस्याओं के स्रोत जमीदारों के अत्याचार है अंग्रेज अधिकारियों ने कभी भी मुंडाओं की समस्याओं को ठीक ढंग से नहीं समझा मुंडा समाज के लोक साहित्य में बिरसा मुंडा के बराबर लोकप्रियता किसी को नहीं मिली लोक साहित्य ही क्यों उसके बाद पूरे आदिवासी साहित्य में बिरसा मुंडा बार-बार लौटते हैं। जनवरी 1900 में बिरसा को चक्रधरपुर के जंगलों से गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटिश सरकार ने उनपर देशद्रोह का मुकदमा चलाया 9 जून 1900 को रांची जेल में बिरसा मुंडा की रहस्य में मृत्यु हो गई। उस समय उनकी आयु केवल 25 वर्ष की थी।

बिरसा मुंडा की विचारधारा और नेतृत्व गुण :

बिरसा मुंडा ने भारतीय जनजाति समाज को एक नई दिशा दी उनके विचार केवल विद्रोह तक सीमित नहीं थे वे सामाजिक समरसता पर्यावरण संरक्षण और स्वराज की भावना से ओतप्रोत थे। उनकी विचारधारा इस प्रकार है-

धरती पर अधिकार: भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं बल्कि जीवन का आधार है उन्होंने भूमि को धरती आबा कहा है अर्थात् धरती का पिता।

सामाजिक सुधार: उन्होंने शराबबंदी स्त्री सम्मान जातीय एकता और शिक्षा के महत्व पर बल दिया।

धार्मिक पुनर्जागरण: उन्होंने विदेशी धर्म प्रभाव का विरोध करते हुए अपने लोगों को स्थानीय देवी-देवताओं और परंपराओं से जोड़े रखा।

स्वराज की भावना: उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ आत्म सम्मान और स्वशासन का नारा दिया।

- बिरसा आंदोलन के परिणाम स्वरुप सरकार ने मुंडाओं को जमीदारों के चंगुल से बचने तथा भूमि की समस्याओं को हल करने का प्रयत्न शुरू किया।
- बिरसा आंदोलन के परिणाम स्वरूप सुधार तथा धर्म संबंधी उनके आंदोलन मुंडाओं में उठे।
- बिरसा आंदोलन के परिणाम स्वरुप ही राणा भगत तथा अन्य आंदोलन सरकार के विरुद्ध शुरू कर दिए गए।

बिरसा मुंडा और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

यद्यपि बिरसा मुंडा का आंदोलन स्थानीय क्षेत्र तक सीमित रहा, लेकिन इसके प्रभाव ने पूरे भारत में स्वतंत्रता संग्राम की नींव को गहराई से प्रभावित किया। इसमें कोई शक नहीं कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की गिनती आधुनिक समाज के सबसे बड़े आंदोलन में की जाती है। विभिन्न विचारधारा और वर्गों के करोड़ो लोगों को इस आंदोलन के राजनीतिक रूप से सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया और शक्तिशाली औपनिवेशिक साम्राज्य को घुटने टेकने के लिए विवश किया। स्वतंत्रता संग्राम आर्थिक विकास के लिए भी संघर्ष था एकदम शुरुआती दिनों से ही आंदोलन की पक्ष धरता का रूख अपनाया था जो आंदोलन में गांधीजी और वामपंथियों के आने के बाद और सुद्रढ हुआ आंदोलन को समाजवादी दृष्टिकोण देने के लिए इन लोगों ने संघर्ष किया यह आंदोलन क्रांतिकारी कृषि सुधारों के कार्यक्रम की दिशा में भी धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

बिरसा के दो प्रमुख उद्देश्य

मुंडा समाज की बुराइयों को दूर करना और अंग्रेजों से लड़कर मुंडाओं की भूमि को स्वतंत्र कराना। बिरसा मुंडा ने आदिवासी समाज को यह सिखाया की आत्म सम्मान शिक्षा और संगठन से ही सामाजिक उन्नति संभव है उन्होंने अपने समाज की पारंपरिक संस्कृति, नृत्य भाषा और धर्म को पुनः जीवित किया उनके विचार आज भी आदिवासी आंदोलन के प्रेरणा स्रोत हैं उनकी दृष्टि में विकास केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक विकास भी था। वे चाहते थे कि उनके लोग अपनी पहचान के साथ आधुनिकता को अपनाएं परंतु आत्मा न खोएं।

निष्कर्ष

बिरसा मुंडा केवल एक नाम नहीं है बल्कि एक युगपुरुष है जिन्होंने स्वतंत्रता समानता और आत्मसम्मान की भावना को नई दिशा दी। उन्होंने यह साबित किया कि देश की स्वतंत्रता की नींव जनता के बलिदान पर टिकी होती है चाहे वह किसी भी वर्ग या जनजाति से ही क्यों न हो उनकी 25 वर्ष की छोटी आयु में किया गया कार्य आने वाली पीढियां के लिए अमिट उदाहरण है। जब भारत विकसित भारत की ओर अग्रसर है तब बिरसा मुंडा की शिक्षाएं और संघर्ष हमें यह याद दिलाता है, कि विकास का अर्थ केवल आर्थिक समृद्धि नहीं बल्कि सामाजिक न्याय सांस्कृतिक आत्मसम्मान और पर्यावरणीय संतुलन भी है। बिरसा मुंडा वास्तव में भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अद्वितीय नायक हैं एक ऐसे योद्धा जिन्होंने बिना किसी सेना, धन, राज्य सत्ता के बल पर ही नहीं बल्कि अपने विश्वास और साहस के बल पर एक जन क्रांति का इतिहास रचा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बिरसा मुंडा और उनका आंदोलन डॉक्टर सत्येंद्र नारायण लाल
2. झारखंड के जननायक बिरसा मुंडा डॉ सुरेश सिंह।
3. धरती आबा बिरसा मुंडा राय दयाल मुंडा।
4. भारत की जनजाति संस्कृति विजय शंकर उपाध्याय विजय प्रकाश शर्मा।
5. स्वतंत्रता संग्राम बिपिन चंद्र, अखिलेश त्रिपाठी, वरुण दे।
6. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष बिपिन चंद्र, मृदुला मुखर्जी, आदित्य मुखर्जी, सुचेता महाजन।